Since 1952

गीतांजलि

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान (जयपुर) की पत्रिका

संस्करण-004/25 प्रकाशन- अगस्त 2025

शुभकामना संदेश

मैं कई वर्षों से गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान से जुड़ी हुई हूँ। इस संस्थान ने मुझे सदैव अपने परिवार जैसा स्नेह, अपनापन और आत्मीय वातावरण प्रदान किया है।

गीता दीदी और उनकी सुपुत्री कृष्णा दीदी ने मुझे बेटी और अपनी छोटी बहन के समान स्नेह दिया है। जब भी मैं इस संस्थान में कदम रखती हूँ, ऐसा अनुभव होता है जैसे मैं अपने छात्र जीवन में लौट आई हूँ।

यहां का वातावरण, छात्र, शिक्षकगण और समस्त स्टाफ इतने स्नेहिल और आत्मीय हैं कि मन बार-बार यहीं रुक जाना चाहता है। मैं सदा यही प्रार्थना करती हूँ कि गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान, इसके विद्यार्थी, शिक्षक और समस्त परिवार निरंतर प्रगति करें, और सदैव प्रसन्न रहें।

"गीतांजलि" के इस अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष है। मेरी हार्दिक शुभकामना है कि यह पत्रिका सभी पाठकों के लिए प्रेरणा, प्रेम और जुड़ाव का स्रोत बने, और संस्थान के विचारों को सभी तक पहुँचाए।

सुश्री कमल पानगड़िया
सदस्य – कार्यकारिणी समिति

मुझे इस बात पर गहरा गर्व है कि मैं एक ऐसे संस्थान से जुड़ी हूँ, जो दशकों से गांधीवादी मूल्यों पर कार्य कर रहा है। यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा शैक्षिक संस्थान है, जहाँ गांधी शैक्षिक शिविर जैसा एक साप्ताहिक विशेष कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किया जाता है। इस शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों में गांधीवादी विचारों और मूल्यों का संचार किया जाता है, जो आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है।

आज जब "गीतांजलि" पत्रिका का नया अंक प्रकाशित हो रहा है, तो मुझे एक बार फिर अपार गर्व और आनंद की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान से जुड़े सभी लोगों के बीच एक मजबूत सेतु है, जो संस्थान की परंपराओं, उपलब्धियों और मूल्यों को आत्मीयता से आगे पहुँचाती है।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान निरंतर नई ऊँचाइयों को छुए, और यहाँ के विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक एवं समस्त परिवार समृद्धि एवं सफलता की दिशा में सतत आगे बढ़ते रहें।

श्रीमती सोनल सुराना
सदस्य – कार्यकारिणी समिति

अतीत के पन्नों से

PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

सत्यमेव जयते

December 1, 1983

The Moti Doongri Bal Mandir, Jaipur, has been doing commendable work in the field of education by inculcating the spirit of self-reliance through the process of basic education. From a humble beginning, the institution has grown into an important seat of learning and training.

It gives me great pleasure to send my greetings to the Management, Staff and the Students and best wishes for the continued progress of the institution.

GIANI ZAIL SINGH

मुख्यमंत्री, राजस्थान जयपुर
सितम्बर, 1973

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि "बाल मन्दिर" हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्था के वार्षिकोत्सव पर स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

बालकों की शिक्षा पर समुचित ध्यान दिया जाये और शिक्षा विकासोन्मुख हो, यह देखना अत्यन्त आवश्यक है। इस दिशा में जो भी प्रयत्न किये जायें वह थोड़े ही हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि बाल मन्दिर के तत्वावधान में "शिशु शाला", प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वारा बालिकाओं के शिक्षण का एक अनुकरणीय कार्य किया जा रहा है।

मैं आपके प्रयत्नों की सफलता की कामना करता हूं।

हरिदेव जोशी

हमारे प्रेरणास्रोत

श्री बी.एल. पानगड़िया

संस्थापक कोषाध्यक्ष
बाल मंदिर, 1952–2003

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के ग्राम सुवाणा में 30 जून 1921 को जन्मे श्री बी. एल. पानगड़िया ने जयपुर में राजपूताना विश्वविद्यालय से बी.ए., एल.एल.बी. की परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे राजस्थान के प्रथम दैनिक पत्र 'लोकवाणी' जयपुर व 'प्रजामंडल पत्रिका' के संपादक मंडल के प्रमुख सदस्य रहे और उन्होंने अंग्रेजी दैनिक पत्र 'बॉम्बे क्रोनिकल' का राजस्थान में प्रतिनिधित्व भी किया।

अप्रैल 1948 में जब संयुक्त राजस्थान (उदयपुर) बना तो नव–निर्मित राज्य के प्रधानमंत्री श्री माणिक्य लाल जी वर्मा के आह्वान पर उन्होंने पुनः राज्य सेवा में प्रवेश किया। 26 वर्षों तक राजस्थान सरकार में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर रह कर वे 1976 में राज्य सेवा से निवृत हुए। इस काल में उन्होंने राज्य में उच्च कोटि की प्रशासन–क्षमता का प्रदर्शन किया। आप ने इस दौरान राज्य के लगभग हर एक मुख्यमंत्री के साथ कार्य किया।

श्री पानगड़िया, बाल मंदिर संस्थान से इसके जन्म से ही निरंतर जुड़े रहे। कार्यकारिणी सदस्य और कोषाध्यक्ष के रूप में बाल मंदिर परिसर के निकट रहते हुए वे रात हो अथवा दिन, चौबीस घंटे इस उगती हुई संस्था के लिए अपना समय देने को तैयार रहते थे। पानगड़िया जी ने सदैव अपना दायित्व पूर्ण समर्पण के साथ निभाया।

संस्थान के कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी श्री पानगड़िया ने नवम्बर 2003 तक यानि 51 वर्ष की लम्बी अवधि तक निभाई और उसके बाद भी अपने जीवन के अंत तक वे संस्था से जुड़े रहे। बाल मंदिर परिवार सदैव इस योगदान के लिए कृतज्ञतापूर्वक एवं सम्मान के साथ आप का स्मरण करता रहेगा।

श्री जगन्नाथ सिंह मेहता

कार्यकारिणी समिति अध्यक्षः
बाल मंदिर, 1986–1990

श्री जगन्नाथ सिंह जी मेहता एक दूरदर्शी शिक्षाविद्, कर्मनिष्ठ प्रशासक एवं बाल विकास के प्रति समर्पित व्यक्तित्व थे। उन्होंने वर्ष 1986 से 1990 तक गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान की कार्यकारी समिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उनके कार्यकाल में संस्थान ने नई ऊँचाइयों को छुआ।

वे संस्था द्वारा आयोजित गतिविधियों जैसे गांधी शैक्षिक शिविर, श्रमदान, आर्ट एंड क्राफ्ट प्रदर्शनी आदि से अत्यंत प्रभावित थे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में अनुशासन, सृजनात्मकता, समाज सेवा और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का विकास हुआ, जिसे उन्होंने न केवल सराहा, बल्कि इसे एक आदर्श मॉडल के रूप में अपनाया।

जब वे राजस्थान शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष बने, तब उन्होंने गीता बजाज बाल मंदिर की इन गतिविधियों को समस्त राज्य के शैक्षणिक संस्थानों में लागू करने की दिशा में पहल की। वे विभिन्न मंचों पर बाल मंदिर का उदाहरण देते हुए यह समझाते कि किस प्रकार ये शिविर विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के समग्र विकास में सहायक हैं।

हर विद्यार्थी न केवल शिक्षित, बल्कि एक सच्चा नागरिक बने, जो राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सके। उनका उद्देश्य बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना –शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक सभी स्तरों पर।

उनके योगदान और दृष्टिकोण ने न केवल संस्था को, बल्कि राजस्थान की शैक्षणिक संस्कृति को भी समृद्ध किया।

74वां स्थापना दिवस

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान ने अपना 74वां स्थापना दिवस बड़े ही उत्साह और गरिमा के साथ मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि शिक्षाविद् मंजू शर्मा व विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. मोनिका राव, सह–प्राध्यापक, राजस्थान विश्वविद्यालय, थीं।

संस्थान के अध्यक्ष श्री रवि गुप्ता जी के साथ सभी अतिथियों ने विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इसके उपरांत विद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सुंदर प्रस्तुति दी, जिससे समारोह में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ।

Do something today that your future self will thank you for

गीता दीदी की कहानी - एक समर्पित जीवन

नोटः कहानी पिछले अंक से आगे...

जेल से छूटीं तो तपेदिक और आँत रोग ने शरीर को घर बना लिया। भुवाली और जयपुर सैनेटोरियम में भर्ती रहीं। जयपुर में ही आँतों का ऑपरेशन हुआ। देह जर्जर हो रही थी पर आत्मशक्ति प्रबल थी।

वर्ष 1948 में बनारस विश्वविद्यालय से बी.ए. पास किया। डॉक्टरी सलाह पर जयपुर की बाहरी बस्ती मोती डूँगरी क्षेत्र में रहीं। निर्धन, पिछड़े हुए, संस्कारहीन, शिक्षा से अछूते, मिट्टी में लोटते–खेलते बच्चों ने आकर्षित किया। बापू के शब्द ''अपने नाम के अनुरूप कार्य करो'' तो सदा तन–मन पर अंकित थे ही–बस जहां एक कमरे में रहती थीं, उसकी खुली छत पर 1952 को गुरुपूर्णिमा के शुभ दिन, 7 जुलाई को बालकों के लिए बाल मन्दिर की स्थापना कर दी। अन्य स्वाधीनता सेनानियों की तरह देश की आजादी के साथ गीता बजाज को एक मंजिल तो मिल गई थी, पर उनका सफर जारी रहा अपनी दूसरी मंजिल की तरफ बाल मन्दिर के माध्यम से देश और समाज की सेवा ।

शिक्षा के इस मन्दिर का संचालन उन्होंने गांधीजी के आदर्शों और सिद्धान्तों के अनुरूप किया। शिक्षा का माध्यम हिन्दी को रखा। देश और समाज की सेवा के बदले में उन्होंने कभी कुछ नहीं चाहा। अपने को प्रचार–प्रसार की चमक से दूर रखकर गीताजी निःस्वार्थ भाव से सेवा करती रहीं। उनके ससुर बींजराज बजाज उन्हें ''बिन पगड़ी का मोट्यार'' कहा करते थे।

सेवा की इस लहर में उन्होंने अपने को पूरी तरह डुबो दिया था। उम्र के साथ–साथ रोग से कमजोर होते शरीर और ऊपर से कुछ अति निकटजनों के आकस्मिक निधन का सदमा तो वह किसी तरह सह गईं पर नियति का क्रूर खेल–बाल मंदिर परिसर में बड़ी लगन और मेहनत से जिस सभागार का निर्माण करवाया था, वह किसी कर्मचारी की नादानी से आग की भेंट हो जाने से उन्हें बड़ा सदमा लगा। इस सभागार का उद्घाटन राष्ट्रपति, महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा करने वाले थे। गीता जी ने इस झटके को बड़े धैर्य और वीरता से सहन किया। 12 जुलाई, 1995 को गुरु पूर्णिमा के दिन बाल मन्दिर के अपने सभी साथी–संगियों और परिवारजनों से हँसती बोलती रहीं, रात देर तक काम किया, पर अगले ही दिन सवेरे उनके मस्तिष्क की नस फट गई। ऐसे में भी अस्पताल ले जाते समय उस वीर महिला ने अपने घर की सीढ़ी के पास बैठकर वहीं से कुछ माटी उठाकर माथे से लगाई। होश में नहीं थीं–फिर भी बुदबुदाई, ''ठहरो, इसे तो माथे से लगा लेने दो।''

अपनी जननी, भारत माँ को गीता बजाज का यह अंतिम प्रणाम था।

वह 3 अगस्त, 1995 के सवेरे तक 22 दिन मृत्यु से भी लोहा लेती रही। अंततः मृत्यु जीत गई, पर उनका लगाया हुआ यह पौधा बाल मन्दिर संस्थान ''एक अकेली महिला का चमत्कार'' उस समाजसेवी और देशप्रेमी गीता बजाज को सदा अमर रखेगा।

अब तो बस–

''हर वर्क पर तेरी तसवीर नजर आती है,
आज यह किसने किताबों को खुला छोड़ दिया?''

गीता दीदी के सपनों को साकार करती तस्वीरें

"GREEN CAMPUS, CLEAN CAMPUS" के तहत संस्थान परिसर में रोटरी क्लब, जयपुर पर्ल द्वारा पौधारोपण

2nd ALUMNI MEET - B.Ed. College

The Second Alumni Meet of Geeta Bajaj Mahila Shikshak Prashikshan Mahavidyalaya was held with great enthusiasm and heartfelt emotion on 26th April, 2025 at the Geeta Girdhar Sabhagaar. The event brought together alumni from across decades, spanning the years 1977 to 2023, in a vibrant celebration of shared memories and success stories.

The event was graced by two esteemed chief guests, Smt. Madhu Bhat and Dr. Bhumika Agarwal, both renowned Rajasthani folk singers, whose presence added cultural richness to the occasion.

SCHOOL SUMMER CAMP : "LEARNING WITH FUN"

The Summer Camp – Learning with Fun was celebrated from 5th May to 15th May. After a long academic session and annual exams, children needed a refreshing break from their studies. They enthusiastically participated in various activities such as dance, mehendi, yoga, art and craft, calligraphy, and painting. The camp provided a joyful learning experience, and the children gained a lot with great zeal and enthusiasm. On the final day, a closing ceremony was held where the children proudly showcased their talents through an impressive exhibition.

You are stronger than you seem, braver than you believe, and smarter than you think

Our Eminent Alumnus

मेरी शिक्षण यात्रा की नींव – गीता बजाज विमेंस टी.टी. कॉलेज

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे गीता बजाज विमेंस टी.टी. कॉलेज जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में अध्ययन करने का अवसर मिला। यह केवल एक कॉलेज नहीं, बल्कि एक ऐसी पाठशाला रही जहाँ मैंने शिक्षा के वास्तविक अर्थ को समझा और एक जिम्मेदार शिक्षक बनने की दिशा में अपने कदम बढ़ाए।

इस कॉलेज का वातावरण सदैव से ही प्रेरणादायक रहा। कॉलेज का वह भवन जो कि गीता दीदी के पुरुषार्थ की सदैव याद दिलाता रहता है– कि हम भी शिक्षा जगत में कुछ ऐसा योगदान दे सकें जो हमारी आने वाली नींव को और मजबूत बना सकें।

यहाँ से मैंने क्या सीखा– एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए विषय का ज्ञान ही नहीं, बल्कि करुणा, धैर्य और नैतिक मूल्यों का होना भी आवश्यक है। आज 12 वर्ष बाद भी मुझे अपने पुराने शिक्षकों द्वारा जाना व पहचाना जाता है। प्रत्येक छात्रा को प्यार व पूरा सम्मान दिया जाता है।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि भले ही टीचिंग ऐड्स बनाने में कठिनाइयाँ थीं, लेकिन यहां की शिक्षा, संस्कार और मार्गदर्शन अमूल्य थे। मैं सदैव इस संस्थान की आभारी रहूँगी जहाँ मेरे शिक्षण जीवन की नींव मजबूत हुई।

दीपा गौतम
पूर्व छात्रा बैच 2013
गीता बजाज विमेंस टी.टी. कॉलेज

मैं, गरिमा सक्सेना, गर्व से कहती हूँ कि मैंने गीता बजाज बाल मंदिर से 1982 से 1985 तक 9वीं, 10वीं और 11वीं में कॉमर्स विषय की पढ़ाई की। उस समय जब कॉमर्स के क्षेत्र में अधिक करियर विकल्प नहीं थे, तब इस विद्यालय ने मुझे न केवल विषय की गहरी समझ दी, बल्कि मेरी जिंदगी को एक नई दिशा भी दी।

आज जो कुछ भी मैं हूँ, उसका श्रेय मैं पूरी निष्ठा और कृतज्ञता के साथ गीता बजाज बाल मंदिर को देती हूँ। इस विद्यालय ने मुझे सिर्फ शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि अनुशासन, ईमानदारी और आत्मविश्वास जैसे मूल्य भी सिखाए, जो मेरे जीवन की सफलता के सच्चे स्तंभ बने।

मेरे शिक्षण जीवन के सफर में मैंने कई प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया है। मुझे महारानी कॉलेज में उप–प्राचार्य के रूप में सेवा करने का अवसर मिला, और मैंने कई प्रसिद्ध संस्थानों में प्रोफेसर के रूप में भी कार्य किया है। इसके साथ ही मैंने विभिन्न शिक्षण संस्थानों की प्रबंध समितियों में भी सक्रिय भूमिका निभाई है, जहाँ मैंने शैक्षणिक विकास और प्रबंधन में अपना योगदान दिया।

मैं तहेदिल से गीता बजाज बाल मंदिर का धन्यवाद करती हूँ, जिसने मुझे ऐसी मजबूत नींव दी, जिस पर मैं अपने सपनों की ऊँचाई तक उड़ सकी। जितनी मजबूत जड़ें होती हैं, उड़ान उतनी ही ऊँची होती है और मेरा जीवन इसी सच्चाई की मिसाल है।

गरिमा सक्सेना
पूर्व छात्रा, 1982–1985
गीता बजाज बाल मंदिर

"गीता बजाज महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, न केवल मेरे शैक्षणिक जीवन की आधारशिला बना, बल्कि यह मेरे व्यक्तित्व निर्माण की भी नींव रहा। यहां के शिक्षण में जहां ज्ञान की गहराई थी, वहीं जीवन मूल्यों और जीवन–कौशल की सीख भी समाहित थी।

हर क्षण, हर अनुभव यहां मेरे लिए प्रेरणादायक और आत्मिक रूप से स्पर्शकारी रहा। विशेष रूप से मुझे श्रीमती गीता दीदी का सान्निध्य प्राप्त हुआ, यह मेरे जीवन का एक अमूल्य अनुभव रहा। आज भी जब मैं उन्हें स्मरण करती हूँ, तो भीतर एक नई ऊर्जा, उत्साह और संकल्प का संचार होता है।

गीता दीदी तथा गीता बजाज महाविद्यालय के आदर्श, संस्कार और शिक्षण परंपरा हम सभी विद्यार्थियों के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है।

विभा जोशी
पूर्व छात्रा, बैच 2007–08,
गीता बजाज विमेंस टी.टी. कॉलेज

अपूर्वा शर्मा, गीता बजाज बाल मंदिर विद्यालय की 2012 की कक्षा 12वीं की प्रतिभावान छात्रा रही हैं। उन्होंने विद्यालय से न केवल उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त की, बल्कि यहाँ के संस्कार, अनुशासन और जीवन मूल्यों ने उनके व्यक्तित्व को विशेष रूप से निखारा।

वे विद्यालय के प्रति गहरी कृतज्ञता रखती हैं और मानती हैं कि इस संस्था ने उन्हें आत्मविश्वास, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना दी। आज भी वह इस विद्यालय को अपने जीवन की सबसे मजबूत नींव मानती हैं और इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हैं।

अपूर्वा शर्मा
पूर्व छात्रा, सन् 2012,
गीता बजाज बाल मंदिर विद्यालय

You miss 100% of the shots you don't take - Wayne Gretzky

52वां वार्षिकोत्सव समारोह

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान का 52वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक 16 फरवरी 2025 को बड़े ही हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। इस विशेष अवसर पर विद्यालय और महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने पूरे जोश और उमंग के साथ भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्थान के वरिष्ठतम सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष श्री प्रेम सिंह टुकलिया थे। उनके साथ मंच पर संस्थान के सम्माननीय सदस्य श्री पी. सी. शर्मा तथा संस्थान की संस्थापिका की सुपुत्री कृष्णा जसदेव सौंई भी उपस्थित रहीं। सभी अतिथियों का संस्थान परिवार की ओर से हार्दिक स्वागत किया गया।

कार्यक्रम की थीम "भारत की विविध नृत्य शैलियाँ", को विद्यार्थियों ने अत्यंत सुंदर एवं कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया। विद्यालय के नन्हे–मुन्ने बच्चों से लेकर महाविद्यालय की छात्राओं तक सभी ने मंच पर अपने रंगारंग कार्यक्रमों से दर्शकों का मन मोह लिया।

52वां वार्षिकोत्सव समारोह

NATIONAL SEMINAR

A National Seminar on the theme **"National Education Policy 2020 and the Changing Scenario of Education"** was successfully conducted by Geeta Bajaj Women's Teachers Training College on 27 March, 2025 at the prestigious Geeta Girdhar Sabhagar, Jaipur. The event brought together a vibrant mix of educators, research scholars, teacher trainees, and academic leaders from across the state and beyond.

The seminar was inaugurated by a distinguished panel of guests:

- Prof. B. M. Verma, Former Secretary, RPSC; Director, Mahatma Gandhi Institute of Governance and Social Sciences; and Former HOD, Department of Political Science, University of Rajasthan
- Dr. Dinesh Chahal, Professor, Central University of Haryana
- Dr. Kamla Vashishth, Former Principal, Geeta Bajaj Bal Mandir, Jaipur

NATIONAL WEBINAR

A National Webinar on **"The Future of Learning – AI-Powered Education"** was successfully organized by Geeta Bajaj Women's Teachers Training College on Tuesday, 15th April 2025, from 11:00 AM to 1:30 PM via Google Meet.

The event aimed to explore the transformative role of Artificial Intelligence in reshaping education and learning practices. The session witnessed insightful deliberations by eminent speakers from reputed institutions:

1. Mr. Prem Pratik, AI and Automation Strategist, Birla Institute of Technology, Mesra Ranchi
2. Mr. Jitendra Choudhary, Assistant Professor, Shyama Prasad Mukherjee College for Women, University of Delhi
3. Mr. Alok Singh, Assistant Professor, Poornima College of Engineering, Jaipur

The welcome address and introduction of the distinguished speakers and participants were delivered by Mr. Praveen Singh Chauhan, Assistant Professor, Geeta Bajaj Women's TT College, Jaipur.

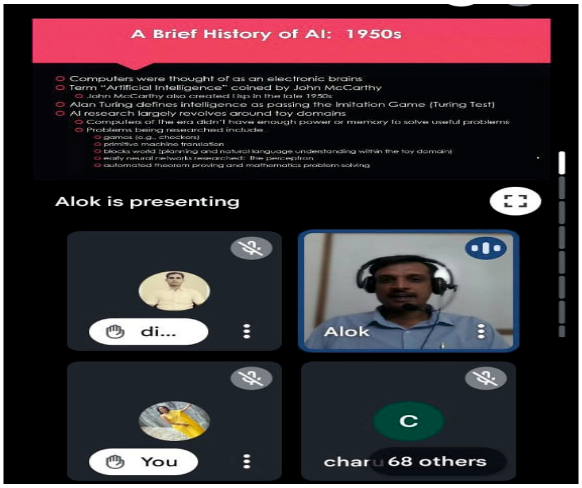

TINY TOTS AT WORK

CREATIVE WRITING

खून में रंगा जिंदगी का रंग

छह दिन पहले जिसकी बारात थी,
आज उसकी अर्थी सजी।
मेहंदी अभी उतरी नहीं थी हाथों से,
और चूड़ियाँ टूट गईं सजी–सजी।

नवल वर्दी पहने जो लौटा था गर्व से,
वो आज चुप है, आँखें बंद हैं,
कंधे झुके हुए हैं देश के,
और माँ–बाप के आँसू अनगिनत हैं।

रंग–बिरंगे सपने जो आँखों में थे,
आज राख हो गए एक पल में।
कभी खिलखिलाते थे जो आँगन,
अब सन्नाटे हैं हर कोने में।

किसी ने पूछा "धर्म क्या था उनका?"
क्या ''खून'' का भी कोई मजहब होता है?
क्या आँसुओं की भी जात पूछते हो?
क्या माँ के क्रंदन में भेद होता है?

धरती भी कांपी होगी उस रात,
जब निर्दोषों का लहू बहा।
वो पूछ रहे होंगे आसमान से,
"क्यों हमें यूँ चुपचाप लुटा?"

न धर्म देखा, न वर्दी का मान,
बस बंदूकें चलीं अंधाधुंध।
अब कौन समझाए इंसान को,
कि इंसानियत ही है सबसे बड़ा धर्म।

नीना शर्मा
सहायक आचार्य (अंग्रेजी)

साड़ी में पहला दिन

जिस दिन कॉलेज में नोटिस आया –
"कल सभी छात्राएँ साड़ी में आएँगी"
बस उसी दिन समझ आया कि
6 मीटर कपड़ा 600
उलझनों का घर होता है!

सुबह मम्मी की डाँट,
"ब्लाउज कहाँ है? सेफ्टी पिन ले ली?"
और मेरी घबराहट –
"अगर गिर गई तो क्या होगा?"

कॉलेज पहुँची तो सब रैंप वॉक
कर रही थीं,
पर अंदर से सबकी कहानी
एक जैसी थी –
•पल्लू क्यों नहीं टिक रहा?
•चप्पल क्यों फिसल रही?
•बैठते वक्त पैर कहाँ रखें?

लेकिन जैसे ही पहली क्लास में घुसी,
और बच्चों ने कहा –
"गुड मॉर्निंग मैम!"
सब घबराहट, पसीना, पिन...
सब गायब।
बस लगा – अब मैं सच में
'टीचर' बन गई!

नेहा परवीन
छात्रा
बी.एड प्रथम वर्ष

क्यों घबराता है पंछी

तू चल सकता है हौसला रख
अपने सपनों को बुलंद रख
क्या हुआ जो एक बार हार गया
होगा सवेरा जरुर विश्वास रख

क्यों घबराता है पंछी
सफलता अब थोड़ी ही दूरी पर

तेरे सपने से ही तेरी पहचान मिलेगी
बस तू मेहनत करते चल
नहीं है इतना कठिन भी
बस थोड़ी सी लगन साथ रख

क्यों घबराता है पंछी
सफलता अब थोड़ी ही दूरी पर

तू वो पंछी है जो खुले आसमान में घूमता
फिर क्यों इन किताबों से डर गया
वो सपना भी पूरा हो जाएगा
बस थोड़ा सब्र साथ रख

क्यों घबराता है पंछी
सफलता अब थोड़ी ही दूरी पर

ये वो रास्ता नहीं जिसमें तू घूम जाए
अपने सपनों की दुनिया से दूर हो जाए
इतना मुश्किल भी नहीं
बस मन में थोड़ी आस रख

क्यों घबराता है पंछी
सफलता अब थोड़ी ही दूरी पर

सलोनी
विद्यालय छात्रा

Brushstrokes of Emotion

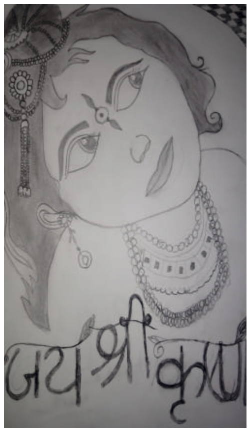

CREATIVE WRITING

विचार कीजिए:

मनुष्य बहुत भाग्यशाली है, क्योंकि वह विचार कर सकता हैं, निर्णय ले सकता हैं, स्वयं की उन्नति के लिए और समाज के विकास के लिए।

परन्तु क्या हम हमारी मानसिकताओं से बाहर निकल कर कुछ सोच पाते हैं? या सिर्फ अपनी उन्नति व विकास के दायरे में सिमट कर रह जाते हैं।

जो हमारे चारों ओर का परिवेश है, क्या हम उसे बदलने का प्रयास करते हैं? या उसी में ढल जाना ही समझदारी समझते हैं।

हम और हमारी समस्याएँ, हम और हमारी आवश्यकताएँ कहीं, यहीं तक तो हमारी सोच सिकुड़ तो नहीं रही। हम हमारे बच्चों को भी तो यहीं सीखा रहें हैं 'तुम्हें क्या करना हैं?' अपने काम से काम रखो। बस अपना ध्यान रखो ।

मैं यह नहीं कहती कि शिक्षा के नवीन आयाम स्थापित करो। समाज कल्याण के काम करो। दूसरों की सेवा में लग जाओ। जगत का कल्याण करो। बल्कि मैं तो यह कहना चाहती हूँ कि स्वयं को शिक्षित करों और शिक्षित की भाँति व्यवहार करो। अच्छे शब्दों का चयन करो तथा स्वयं को विकसित करो। विकास की यह अनिवार्यता नहीं हैं कि हम अपनों से कतराएं या अभद्रता दर्शाएं।

मनुष्य हो आप। विचार कर सकते हो। इसलिए विचार प्रधान बने। सबके हित में भले ही अपना हित ना समझें, परन्तु ध्यान रखे कि आपके हित ऐसे हो जो किसी और के अहित का कारण ना बनें।

मूल्य एवं नैतिकताएँ केवल विचार बनकर ना रह जायें। इन्हें व्यवहार में लाये। कहीं ऐसा ना हो कि मूल्यों व नैतिकता के अभाव में परम्पराएँ और सम्मान के निशान ही मिट जाये।

मिट ना जाये कहीं पूर्वजों कि सलाह की पक्तियां

मिट ना जाये कहीं छोटे– बड़ों के बीच की दूरियां

मिट ना जाये कहीं नर–नारी के बीच व्यवहार की तकनीकियां

इसलिये विचार कीजिए क्योंकि आप विचार प्रधान हैं, विचार कीजिए क्योंकि आप ही कर्मधार हैं, विचार कीजिए क्योंकि अभी देर नहीं हुई हैं।

सरोज टेलर
सहायक आचार्य (भूगोल)

इतिहास की 5 सबसे मजेदार और अनोखे युद्ध

1. एमु युद्ध (**Emu War**) – ऑस्ट्रेलिया, 1932

किसके बीच?: ऑस्ट्रेलियन आर्मी बनाम... पक्षी!

क्या हुआ?: ऑस्ट्रेलिया में बहुत सारे एमु (एक बड़े आकार का उड़ान रहित पक्षी) खेतों को बर्बाद कर रहे थे। सरकार ने सेना को भेजा कि वे इन पक्षियों को "हटा दें"। सेना मशीनगन लेकर गई, लेकिन एमु बहुत तेज दौड़ते थे और जंगलों में छुप जाते थे।

नतीजा?: पक्षी जीत गए! सेना को वापस बुला लिया गया।

2. बाल्टी युद्ध (**War of the Oaken Bucket**) : इटली, 1325

किसके बीच?: दो शहर – मोडेना और बोलोग्ना

क्या हुआ?: मोडेना के सैनिकों ने बोलोग्ना के एक कुएँ से लकड़ी की बाल्टी चुरा ली। इस बात पर दोनों शहरों के बीच युद्ध छिड़ गया।

नतीजा?: हजारों सैनिक लड़े और अंत में बाल्टी मोडेना के पास ही रह गई! आज भी वह बाल्टी संग्रहालय में है।

3. पेस्ट्री युद्ध (**Pastry War**) : फ्रांस और मेक्सिको, 1838

क्यों हुआ? : एक फ्रेंच पेस्ट्री बेकरी के मालिक ने शिकायत की कि उसकी दुकान को मेक्सिकन सैनिकों ने नुकसान पहुँचाया।

फ्रांस ने क्या किया?: बदले में फ्रांस ने मेक्सिको पर हमला कर दिया!

नतीजा?: पेस्ट्री की वजह से जंग! और मेक्सिको ने मुआवजा देकर जंग को खत्म किया।

4. पिग युद्ध (**Pig War**) : अमेरिका और ब्रिटेन, 1859

क्यों?: अमेरिका और ब्रिटेन के बीच एक द्वीप को लेकर झगड़ा चल रहा था। एक दिन ब्रिटिश किसान का सुअर अमेरिकी किसान की फसल खा गया, और उसने सुअर को मार दिया।

फिर?: दोनों देशों की सेनाएँ आमने–सामने आ गईं।

क्या जंग हुई?: हाँ पर किसी को कोई चोट नहीं लगी। जंग का कारण एक सुअर था।

5. जेनकिन के कान का युद्ध (**War of Jenkins' Ear**) : इंग्लैंड और स्पेन, 1739

क्यों हुआ?: एक अंग्रेज व्यापारी जेन्किंस का कान एक स्पेनिश सैनिक ने काट दिया।

जेन्किंस ने क्या किया?: उसने अपना कटा हुआ कान बोतल में रखा और ब्रिटिश संसद को दिखाया।

नतीजा?: ब्रिटेन ने स्पेन से युद्ध कर दिया एक कान की वजह से।

सीख क्या मिलती है?

इतिहास सिर्फ तलवारों और क्रांति की कहानी नहीं, बल्कि कुछ ऐसी घटनाओं से भी भरा है जो हमें हँसने पर मजबूर कर देती हैं। ये युद्ध भले ही अजीब हों, लेकिन ये बताते हैं कि छोटी–छोटी बातों को अगर गलत समझ लिया जाए तो बड़ा झगड़ा हो सकता है।

पूनम व्यास
सहायक आचार्य (इतिहास)

ACADEMIC ACHIVERS

In School Board Examination

CLASS-12th (ARTS)

Khushi Kumari
1st

Vanshita
2nd

Kunal Saini
3rd

CLASS-10th

Bharti Kumari
1st

Divyanshu Saini
2nd

Vinay Kumar Meena
3rd

CLASS-8th

Mohan Saini
Grade 'A'

Monika Kanwar
Grade 'A'

Anjali Choudhary
Grade 'A'

CLASS-5th

Harsh Kumawat
Grade 'A'

Kanishka Gaur
Grade 'A'

Yuvraj
Grade 'A'

Aditya Rajbalai
Grade 'A'

GLOW JUMP KIT ACTIVITY

"Glow jump kit activity" was done in between classes 6th, 7th and 8th. It was insightful and beneficial for students and the school team. This activity was conducted by Suman Pareek ma'am from CWC promoting awareness about proper handwashing techniques, healthy habits among students.

TEAM GEETANJALI

Publisher
Gurdev Singh

Executive Editor
Dr. Deepti Tripathi
Prabhakar Jha

Editorial team
Neera Pareek
Naval Kumar
Neena Sharma
Drishti Kriplani

Graphics & Design
Praveen Singh
Khushboo Sharma

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान

मोती डूंगरी सर्किल, गोविन्द मार्ग, जयपुर (राज.)

फोन– 0141–2624143, 0141–2623730 ई–मेल : geetabajajsansthan.jaipur@gmail.com

नवीन सत्र 2025–26 के लिए सभी कक्षाओं में प्रवेश प्रारंभ हैं...